अपने पहरावे की चौकसी करो

(4:17-24)

पीपल वीकली नामक पत्रिका ''सबसे बढ़िया पोशाक'' और ''सबसे भद्दी पोशाक'' पहनने वाली प्रसिद्ध हस्तियों की एक लिस्ट छापती है।[1] फैशन में रुचि रखने वाले लोग यह देखने के लिए कि कौन फैशन ''में'' है और कौन ''बाहर'' इस लिस्ट को पढ़ते हैं।

ज़्या आपको मालूम था कि परमेश्वर हमारे पहरावे पर नज़र रखता है ? वह अवश्य नज़र रखता है। आपने नई पैंट पहनी है या नहीं या आपके पास नये स्टाइल के जूते होने से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका ध्यान अलग तरह के पहरावे अर्थात उस आत्मिक पोशाक पर होता है जो हम में से हर कोई पहनता है।

पौलुस ने इस पहरावे के बारे में विस्तार से लिखा है। उसने लिखा कि मसीही होने के नाते हमें ज़्या पहनना चाहिए और ज़्या नहीं:

> इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। ज़्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। और वे सुन्न होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें। पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। बरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है (4:17-24)।

इसमें एक आधारभूत सच्चाई है: *मसीही लोगों को चाहिए कि मसीह में जीवन के एक पूरे नये ढंग को अपना लें।*

पुराने कपड़े

1960 के दशक में जोसेफ ज़्लैचर ने *सिचुएशन एथिज़्स* नामक एक पुस्तक प्रकाशित की थी। इस पुस्तक में, उसने नैतिक चरमों के होने से इन्कार किया। ज़्लैचर ने यह दिखाया कि सही सदा सही नहीं होता और गलत सदा गलत नहीं होता। उसके अनुसार नैतिकता परिस्थितियों के अनुसार बदल जाती है: हो सकता है कि जो कार्य एक दिन सही है वह दूसरे दिन गलत हो।

अब, उस पुस्तक के प्रकाशन के कुछ दशक बाद ही, लगता है कि ज़्लैचर की सिचुएशन एथिज़्स समाज पर छाई हुई है। एक पीढ़ी पहले ही, लोग चरमों के आधार पर नैतिक मान्यताओं को मानते थे: विवाह तक कुंवारे की बात पर केवल कुछ लोग ही प्रश्न उठाते थे कि; दिन के कार्य का वेतन उसी दिन देना सही है; समलैंगिकता गलत है; या झूठ बोलना, चोरी करना, गंदी फिल्में देखना या व्यभिचार करना अच्छा नहीं है। आज के समाज में इन विचारों को महत्व नहीं दिया जाता है।

ऐसा लगता है कि पौलुस के शब्द आज के हमारे समाज में मसीही लोगों के लिए ही लिखे गए हैं। उसने कहा, ''इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो'' (4:17)।

''अन्यजातीय लोगों'' की रीति पर चलने से ज़्या भाव है ? पौलुस ने इसे मृत्यु की ओर बढ़ते कदम बताया जिसमें हर कदम अनन्त विनाश की ओर जा रहा है।

पहला कदम *हठधर्मिता* है। भक्तिपूर्ण जीवन शैली को ठुकराने वाले लोगों ''की बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं'' (4:18)। मन कठोर हो सकते हैं, पथरा सकते हैं, या पत्थर बन सकते हैं। आयत 18 में प्रयुक्त ''कठोरता'' शब्द उस गट्ठे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो टूटी हुई हड्डी के जोड़ का रूप ले लेता है। यह गट्ठा वास्तव में हड्डी से भी कठोर हो जाता है। मनुष्य के मन पर पाप का असर भी धीरे-धीरे ऐसे ही होता है।

लड़कपन में मेरे पड़ोस का एक मित्र नंगी तस्वीरों वाली अपने पिता की एक पत्रिका निकाल लाया था। हमने उस पत्रिका का हर पृष्ठ देखने के लिए छिपने की जगह ढूंढ़ी। हम जानते थे कि यह गलत है। हम नहीं चाहते थे कि लोगों को पता चल जाए कि हम ज़्या कर रहे हैं, इसलिए हम छिप गए। उस दिन से मेरा मन कठोर होने लगा। कुछ ही सालों में, मैं अपने पैसों से ऐसी पत्रिकाएं खरीदने लगा। मैं पाप का आदी हो चुका था: जब तक हम पाप की ''हां में हां'' मिलाते रहते हैं तब तक मृगतृष्णा की तरह यह एक ऐसी प्यास के रूप में काम करता है जो कभी बुझ नहीं सकती। मैं आपको बता सकता हूं कि केवल यीशु ही हमें स्वतन्त्र कर सकता है और हमारे मनों को फिर से नम्र कर सकता है।

दूसरा कदम *अंधेरा* है। भक्तिपूर्ण जीवन शैली से कतराने वाले लोगों ''की बुद्धि अन्धेरी हो गई है...'' (4:18)। मुझे अंधेरे में लड़खड़ाना अच्छा नहीं लगता, ज़्या आपको

लगता है ? अंधेरे में टटोलने वाले व्यज़्ति को चोट लग सकती है। पाप में रहकर हमें चोट ही लगती है। यह जीवन को अंधकारमय बना देता है। अंधकार में व्यज़्ति को मार्ग दिखाई नहीं देता। उदाहरण के लिए, नशा करने वाला व्यज़्ति कोकीन से मिलने वाले क्षणिक ''आनन्द'' में खो जाता है। केवल कुछ ही क्षण के रोमांच के लिए प्राण जोखिम में डालने का काम अंधेरी बुद्धि ही कर सकती है। पाप से हम स्पष्ट सोच नहीं रख पाते हैं।

तीसरा कदम *न्याय* है। पाप व्यज़्ति को ''परमेश्वर के जीवन से'' अलग करता है (4:18)। पाप हमें परमेश्वर से दूर करता है जो न्याय का एक रूप है और स्पष्ट सोचने की क्षमता छीन लेता है। जैसे एक अंग्रेज़ी अनुवाद में कहा गया है, ''वे परमेश्वर से व्यवहार करने के लिए इतने समय से इन्कार करते रहे हैं कि वे न केवल परमेश्वर से बल्कि वास्तविकता से भी दूर हो गए हैं। अब वे सीधा नहीं सोच सकते'' (4:18; TM)। शराब, जुआ, गंदी फिल्में, नशे और अवैध शारीरिक सज़्बन्धों का यही परिणाम होता है।

मौत के इस रास्ते में चौथा कदम *लापरवाही* है। भज़्तिपूर्ण जीवन न बिताने वाले लोगों के बारे में पौलुस ने कहा, ''और वे सुन्न होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें'' (4:19)। यह पढ़कर हम में से हर एक में कामुक तथा अशुद्ध बनने की क्षमता का ध्यान आता है। हम में से कोई भी किसी चीज़ का लोभ करके अपने जीवन पर से नियन्त्रण खो सकता है।

प्राचीन यूनानी लोगों में स्पार्टा देश के एक लड़के की कहानी बताई जाती थी, जिसने एक लोमड़ी चुराई थी और फिर उसकी भेंट उसके मालिक से हो गई थी। अपने कृत्य को छिपाने के लिए, उस लड़के ने लोमड़ी को अपने कपड़ों में डाल दिया। वह तनकर खड़ा हो गया। घबराई हुई लोमड़ी द्वारा उसके महत्वपूर्ण अंगों पर पंजों से काटने पर भी उस लड़के ने आंख नहीं झपकी। पीड़ादायक मृत्यु सहकर भी, उस लड़के ने यह नहीं माना कि उसने गलती की थी।[2]

पाप ऐसा ही है। यह लोगों को अपने जाल में इतना फंसा लेता है कि वे यह मानने के बजाय कि उनका ''जीवन का ढंग'' मृत्यु की ओर जाने वाला मार्ग है, हर प्रकार का कष्ट सह लेते हैं।

नये कपड़े

पाप हमें मृत्यु की ओर ले जाता है, परन्तु यीशु हमारे मार्ग की दिशा बदल सकता है। पिछले जीवन के विषय में, पौलुस ने कहा, ''पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई'' (4:20)। उसे जानने के लिए जीवन के मार्ग को बदलना आवश्यक है।

मसीह में होने को स्कूल जाने की तरह कहा जा सकता है। *मसीह में स्कूल हम यह सीखने के लिए गए हैं कि ज़्या पहनना है और ज़्या उतारना चाहिए।* मसीह हमारे जीवनों के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षक तथा कक्षालय है। हम मसीह को *जानते हैं* (4:20)। मसीह स्वयं हमारा *पाठ्यक्रम* है। जीना सीखने के लिए हम उसका अध्ययन करते हैं। हमने मसीह को *सुना* भी है (4:21)। अन्य शज़्दों में, मसीह हमारा *शिक्षक* है। हमने उसकी *शिक्षा* पाई

है (4:21)। मसीह हमारी *कक्षा* है। उसमें हमें वह सब मिला है जो स्पष्ट नैतिक सोच के लिए आवश्यक है।

पौलुस ने मसीह के अनुयायी बनने की तुलना कपड़े बदलने से की है। उसने लिखा, ''तुम अगले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को, जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो'' (4:22)। मसीह में होना पुराने कपड़ों को उतारने, उन्हें एक थैले में बंद करके फैंकने जैसा है ताकि उन्हें दोबारा कभी न पहना जाए। मसीह में, पुराने जीवन के साथ हम ऐसा ही करते हैं।

फिर पौलुस ने आगे कहा, ''अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ'' (4:23)। ''नये बनते जाओ'' शब्द का अर्थ फिर से छोटे बनना, नये बनना, हमेशा ताज़ा या नये रहना और शुद्ध बने रहना है।

आयत 24 एक कदम आगे ही ले जाती है: ''नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।'' इसे दूसरी तरह कहें, तो यीशु हम से उसके जीवन को पहन लेने के लिए कहता है।

सारांश

मसीह का नया जन्म पहनने में अपनी सहायता के लिए हमें क्या कदम उठाने होंगे?

निर्णय लें। हर दिन आपके सामने नैतिक पसन्द होती है। हर क्षण आप जो भी निर्णय लेते हैं, उसका प्रभाव आप द्वारा पहले ही यह निर्णय लिए जाने से प्रभावित होता है कि आप कैसा व्यक्ति बनना चाहते हैं। यह निर्णय लें कि आप मसीह जैसा बनना चाहते हैं।

दिन का आरम्भ सही दिशा में करें। हर दिन की शुरुआत परमेश्वर के आगे प्रार्थना से करें। कुछ समय परमेश्वर का वचन पढ़ने से दिन का आरम्भ करें।

एक रेखा बना लें और उसके अनुसार ही चलें। बहुत से मसीही लोग दृढ़ होना चाहते हैं, लेकिन समस्या यह है कि हम सब में कमज़ोरियां हैं। यह जानकर कि हमारी क्या कमजोरियां हैं, हमें चाहिए एक रेखा खींचकर उस रेखा से परे रहें। आपको जीवन के किस क्षेत्र में अधिक संघर्ष करना पड़ता है? आपको क्या लगता है कि आप कौन सा पाप बार-बार करते हैं? आपका ध्यान खींचने के लिए शैतान का सबसे बढ़िया ''चारा'' कौन सा है? दोनों में विभाजित रेखा खींचकर पाप से परे रहना सीखें।

अपने हृदय की चौकसी करें। आप दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते। यदि आप यीशु को अपना प्रभु बनाना चाहते हैं, तो आपको कुछ विचारों तथा कार्यों को अपने जीवन से निकालना होगा।

अपने मन की चौकसी करें। जो कुछ आप मन में तय करते हैं, वही अंत में युद्ध का परिणाम बन जाता है।

आंखों की चौकसी करें। उत्पत्ति 39 अध्याय में यूसुफ ने दिखा दिया कि उसे मालूम था कि ऐसा नहीं हो सकता कि ''आग से खेलकर कोई जले न।'' राजा दाऊद इस तथ्य को भूल गया था। उसने अपनी आंखों की चौकसी नहीं की। ''खबरदार छोटी आंख क्या

देखती'' केवल बच्चों के गीत की एक पंज़्ति ही नहीं है।

अपने जीवन के हर भाग की चौकसी करें। कोई भी विचार या कार्य करना जो आप जानते हैं कि आपके आत्मिक जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है, अच्छा नहीं होगा। ''मैं देख लूंगा,'' ''यह इतना बुरा नहीं है,'' या ''बाइबल इसके बारे में साफ नहीं बताती'' जैसे वाज़्यांशों वाले विचारों को उचित ठहराने से बचें। छोटे से छोटे विचार तथा कार्य में भी चौकसी बरतें।

परमेश्वर हमारे आत्मिक पहरावे को देखता है। अपने बारे में सोचते हुए प्रार्थना में प्रभु के पास जाएं। कोई भी अंगीकार या समर्पण, जो आपको लगता है कि प्रभु के सामने करना चाहिए, अवश्य करें। उससे सामर्थ मांगें कि वह आपको मसीह को पहनने की सामर्थ दे।

टिप्पणियां

[1]''बैस्ट एण्ड वर्स्ट ड्रेस्ड: 1994,'' *पीपल वीकली* (19 सितज़्बर 1994): 58-117. [2]जॉन मेकार्थर, जू. *इफिसियंस,* द मेकार्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो, इलिनोइस: मूडी प्रैस, 1986), 170.